रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–73, अंक : 47, 16-19 फरवरी 2017 तदनुसार 8 फाल्गुन सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

जीव का लक्ष्य महान् संग्राम

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः।
जातं यत्त्वा परि देवा अभूषन्महे भराय पुरुहूत विश्वे।।

–ऋ० ३।५१।८

शब्दार्थ–हे **इन्द्र** = ऐश्वर्याभिलाषी जीवात्मन् ! **सः** = ऐसा तू **इह** = इस संसार में **वावशानः** = निरन्तर कान्तिमान् होता हुआ, अपने **सखिभिः** = मित्र **मरुद्भिः** = प्राणों के साथ **नः** = हमारे **सुतम्** = निष्पादित **सोमम्** = सोम की **पाहि** = रक्षा कर, **यत्** = क्योंकि हे **पुरुहूत** = अनेक मनुष्यों से स्पर्धनीय ! **विश्वे+देवाः** = सब देव **जातं +त्वा** = प्रकट हुए तुझको **महे + भराय** = महान् संग्राम के लिए **परि + अभूषन्** = सब ओर से अलंकृत करते हैं।

व्याख्या–यह मन्त्र जीवन को संग्राम बताता है। संग्राम में विजय पाने के लिए मरने-मारने में तत्पर मित्रों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जीव को ऐसे संग्राम में जूझना है, जिसमें उसे आक्रमण की अपेक्षा रक्षा-कार्य अधिक करना है। उस अवस्था में तो मर मिटने वाले मित्रों की और भी अधिक आवश्यकता है। जीव को भगवान् ने ऐसे साथी दिये हैं जो सदा इसके सङ्ग रहते हैं, मुक्ति होने तक साथ बने रहते हैं। वे हैं मरुत् = प्राण। प्राण आत्मा के साथ सदा बने रहते हैं। इन प्राणों को अपना सखा बनाना आत्मा का कार्य है। इनको सखा बनाकर प्राप्त की रक्षा करना और अप्राप्त को प्राप्त करना जीव का कर्त्तव्य है। जीव के सामने एक महान् संग्राम है। भगवान् ने इस संग्राम के लिए इसके चारों ओर देवों को खड़ा कर दिया है। जीवन-संग्राम में ये देव इसके सहायक हैं। इसके सखा प्राणों ने इसके लिए ब्रह्मामृत रस तैयार किया है। उसकी यदि यह रक्षा कर ले, तो अपने साथियों के सहयोग से रक्षित सोम का पान करने से यह अमृत हो जाएगा, अन्यथा जन्म-मरण का जञ्जाल सिर पर है ही।

ब्राह्मणग्रन्थों तथा उपनिषदों में इस जीवन-संग्राम का अनेक बार, विविध प्रकार से वर्णन हुआ है। वहाँ इस संग्राम को देवासुर-संग्राम कहा गया है। देवों और असुरों का सदा ही युद्ध ठना रहता है। अनेक बार ऐसा प्रतीत होता है कि देव हार जाएँगे, किन्तु अन्त में देवों का ही विजय होता है। होना ही चाहिए, क्योंकि देव सत्यपक्षावलम्बी का नाम है। संसार का यह नैसर्गिक नियम है कि '**सत्यमेव जयते नानृतम्**' = सदा सत्य का विजय होता है, न कि झूठ का और '**सत्यमेव देवाः**' (शत० १।१।१।४) = देव सत्यस्वरूप ही होते हैं।

ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों तथा अन्य आर्षग्रन्थों में जहाँ-जहाँ भी देवासुर-संग्राम की चर्चा है, वहाँ सब जगह यह भी लिखा है कि देवों ने **विष्णु को आगे करके** विजय पाया। इन्द्रसमेत देव विष्णु के पास जाते हैं। सचमुच विष्णु = परमदेव भगवान् ['**विष्णुर्वै देवानां परमः**' (शत०) = विष्णु सब देवों में से श्रेष्ठ हैं] के सहयोग के बिना किसी शुभ कार्य में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। इस तत्त्व को देवस्वभाव मनुष्य सदा सामने रखते हैं। जीव = इन्द्र देवराज हैं, असुरों = पापभावों से इसे युद्ध करना है। निःसन्देह देव-दिव्यभाव इसके सहायक हैं, किन्तु जब तक यह परमदेव की सहायता प्राप्त नहीं करता, तब तक विजय सन्दिग्ध है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

लुधियाना पहुंचो लुधियाना पहुंचो

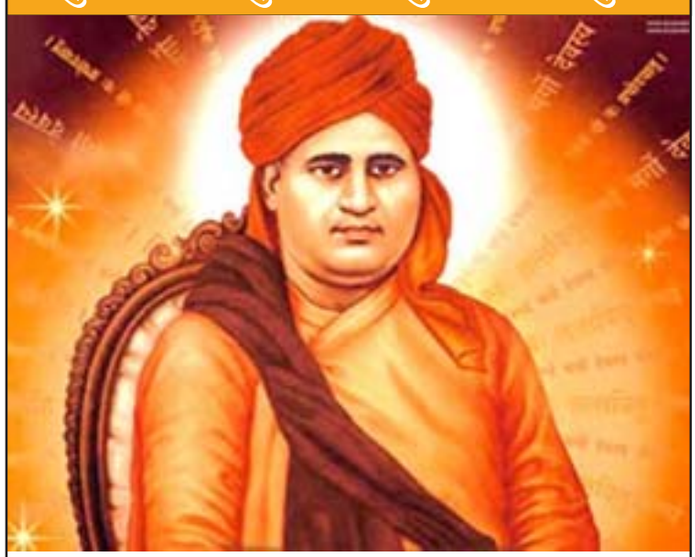

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 193वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन आर्य महिला कालेज, सिविल लाईन्ज लुधियाना में 19 फरवरी 2017 को प्रातः 9.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक होगा। इसी उपलक्ष्य में 18 फरवरी 2017 को 10.30 बजे विशाल शोभायात्रा लुधियाना में निकाली जा रही है। इस समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी **स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल एवं आचार्य विश्वामित्र जी बिजनौर** पधार रहे हैं। आप इस भव्य समारोह में परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

-: निवेदक:-

श्री सुदर्शन शर्मा — सभा प्रधान

श्री प्रेम भारद्वाज — सभा महामंत्री

''वैदिक धर्म की मुख्य शिक्षाएँ''

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (ढो तल्ला) कोलकत्ता-700007

प्रश्न-वैदिक धर्म की ईश्वर-विषक क्या शिक्षाएँ हैं ?

उत्तर-वैदिक धर्म, ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्व शक्तिमान मानता है, उसी की पूजा व उपासना करनी योग्य है और किसी की नहीं, यह वैदिक धर्म की मुख्य शिक्षा है। उस ईश्वर के बारे में वेद कहता है-

य एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः। अथर्व. २/२/१

अर्थात् एक ईश्वर ही पूजा के योग्य है।

प्रश्न-वेदों में तो अग्नि, मित्र, वरुण आदि बहुत-से देवों की पूजा का विधान पाया जाता है, ऐसा बहुत-से विद्वान् बताते हैं। क्या उनका विचार ठीक है ?

उत्तर-नहीं ! ऐसा विचार बिलकुल अशुद्ध है। वेदों में आए अग्नि, मित्र, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि शब्द ईश्वर के ही वाचक हैं। ऋग्वेद में साफ बताया है-

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।
ऋ० १/१६४/४६

उस एक ही परमेश्वर को विद्वान् बहुत-से नामों से पुकारते हैं। जैसे एक ही मनुष्य को उसका भाई, भाई के नाम से, पिता पुत्र के नाम से, पुत्र पिता के नाम से, भतीजा, चाचा के नाम से और भांजा, मामा के नाम से पुकारता है, वैसे ही परमेश्वर के हजारों गुण होने के कारण विद्वान् लोग उसे हजारों नामों से पुकारते हैं।

प्रश्न-क्या वेदों में मूर्त्तियों की पूजा का विधान है।

उत्तर-नहीं ! वेदों में एक ही सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्ति मान् परमेश्वर की पूजा की आज्ञा है, जिसके विषय में बताया है कि वह निराकार है (अकायम्, अव्रणम् अस्नाविरम्: यजु० ४०/८) उसका किसी तरह का शरीर नहीं। जिसका शरीर होता है वह सर्वव्यापक और पूर्ण नहीं हो सकता। जब परमेश्वर का शरीर ही नहीं तो मूर्त्ति कैसे बन सकती है ? इसीलिए वेद में कहा है-

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्यनाम महद्यशः यजु० ३२/३

अर्थात् जिस परमेश्वर की बड़ी महिमा है, उस सर्वव्यापक परमेश्वर की मूर्त्ति नहीं हो सकती।

प्रश्न-परमेश्वर निराकार है, तो भी धर्म की रक्षा और अधर्म के नाश के लिए वह अवतार धारण करता है, ऐसा बहुत-से लोग मानते है। क्या यह बात ठीक और वेदानुकूल है ?

उत्तर-यह बात ठीक और वेदानुकूल नहीं है। जब परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, तो क्या वह शरीर धारण किये बिना धर्म की रक्षा और अधर्म का नाश नहीं कर सकता। ईश्वर न कभी पैदा होता है, और न मरता है। वह तो सदा एक जैसा ही रहता है। वेद में उसे ''अज'' के नाम से पुकारा गया है, जिसका अर्थ है-कभी पैदा न होने वाला।

प्रश्न-ईश्वर की पूजा कहाँ और कैसे करनी चाहिए ?

उत्तर-ईश्वर के निराकार होने से उसकी मूर्त्ति बनाकर आवाहन करना (घण्टी बजाकर बुलाना) फूल चढ़ाना आरती करना, भोग लगाना, चन्दन लगाना आदि कार्य बिल्कुल व्यर्थ हैं। उसकी पूजा तो हृदय में ही हो सकती है, जहाँ आत्मा और परमात्मा दोनों ही है। साथ ही परमात्मा के बनाए सब प्राणियों के साथ प्रेम करना और खास कर अनाथों, गरीबों और दुखियों की हर तरह से सहायता करना-यही परमेश्वर की सच्ची पूजा है।

प्रश्न-वैदिक धर्म की दूसरी शिक्षा क्या है।

उत्तर-वैदिक धर्म की दूसरी शिक्षा है-सब मनुष्यों को भाई और परमात्मा को पिता-माता समझकर सबकी भलाई के लिए प्रेमपूर्वक यत्न करना। जन्म से ऊँच-नीच का अभिमान करना और किसी को भी अस्पृश्य व अछूत समझना वैदिक धर्म की शिक्षा के विरुद्ध है।

प्रश्न-वैदिक धर्म की तीसरी शिक्षा क्या है ?

उत्तर-वैदिक धर्म की तीसरी शिक्षा कर्मों का नियम है, जिसका मतलब यह है कि हम जैसा काम करते हैं, वैसा ही हमें फल मिलता है। बुरे काम करने से हमें पछताना पड़ता है और उसमें परिणाम दुःख, शोक, अशान्ति आदि देते हैं। अच्छे काम करने से हमें सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त होता है। हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि ईश्वर न्यायकारी है और दुनियां में झूठ और धोखा देर तक नहीं चल सकता। अन्त में उसकी पोल खुल जाती है। विजय तो जरूर सत्य की होती है। जैसा कि ऋषियों ने कहा है-

सत्यमेव जयते नानृतम। मुण्डकोपनिषद्। सत्य की विजय होती है, झूठ की नहीं। इसलिए हमें कभी भी सत्य और न्याय के मार्ग को न छोड़ना चाहिए, चाहे ऐसा करने में कितने भी कष्ट उठाने पड़ें। न्यायकारी ईश्वर की दया से अन्त में हमें अवश्य ही अच्छा फल मिलेगा।

प्रश्न-क्या कर्मों का फल हमें इसी जन्म में मिल जाता है या दूसरे भी जन्म लेने पड़ते हैं ?

उत्तर-सारे कर्मों का फल इसी जन्म में ही नहीं मिल जाता। उसके लिए कई जन्म लेने पड़ते हैं ताकि कई तरह का अनुभव प्राप्त हो सके, जो एक जन्म में कभी सम्भव नहीं हो सकता।

प्रश्न-इस बात का क्या प्रमाण है कि कई जन्म होते हैं ? हमें तो अपने और किसी भी जन्म का हाल याद नहीं।

उत्तर-केवल याद न रहने का यह मतलब नहीं कि पूर्वजन्म होता ही नहीं। यदि तुमसे यह पूछा जाये कि परसों तुमने क्या खाया था तो तुम में से बहुतों को याद न होगा, पर क्या इसका यह मतलब है कि तुमने कुछ नहीं खाया था ? अनेक जन्म होने के सैकड़ों प्रमाण मिलते हैं।

प्रश्न-यदि कर्मफल का नियम ठीक हो तो तीर्थ स्थान व यात्रा से पापनाश के विश्वास को कैसे ठीक माना जा सकता है ?

उत्तर-गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, गोदावरी आदि नदियों में स्नान करने अथवा हरिद्वार, द्वारिका जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम्, कन्या-कुमारी आदि तीर्थस्थानों की यात्रा करने से किए हुए पाप धुल जाते हैं, यह विश्वास वेद और युक्ति के बिल्कुल विरूद्ध है। वास्तव में किए हुए पापों का फल हमें अवश्य भोगना ही पड़ता है। उसे भोगे बिना हमारा किसी तरह भी छुटकारा नहीं हो सकता। सत्य, क्षमा, इन्द्रिय-विग्रह, दया, मन की पवित्रता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा आदि ही सच्चे तीर्थ है, जिनकी सहायता से मनुष्य संसार रूपी समुद्र को पार कर सकता है। जैसा कि महाभारत में कहा है।

सत्यं तीर्थ क्षमा तीर्थं, तीर्थ मिन्द्रिय निग्रहः।
ब्रह्मचर्य परं तीर्थम, अहिंसा तीर्थ मुच्यते।।

सर्व भूत दया तीर्थं, तीर्थ मार्जवमेव च।
तीर्थ नामुत्तमं तीर्थ विशुद्धि-र्मनसः पुनः।।

यही श्लोक पदमपुराण उत्तर खण्ड अ० 237 में भी आए हैं।

अर्थात् सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियों को वश में रखना तीर्थ है, ब्रह्मचर्य बड़ा भारी तीर्थ है, अहिंसा तीर्थ है, सब प्राणियों पर दया करना तीर्थ है, सब से बड़ा तीर्थ तो मन को शुद्ध व पवित्र रखना है। इन सत्य, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, चित्तशुद्धि आदि के बिना कभी किसी को मुक्ति व दुःख से छुटकारा प्राप्त नहीं हो सकता।

प्रश्न-वैदिक धर्म की चौथी शिक्षा क्या है ?

उत्तर-वैदिक धर्म की चौथी शिक्षा सम-विकास अथवा अपने शरीर, मन, आत्मा आदि की सब शक्तियों को बढ़ाने का यत्न करना है। वैदिक धर्म इस बात पर जोर देता है कि हमें अपनी सब शक्तियों को बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही वह इसके साधन बताता है। व्यायाम को ठीक तौर पर करने से शरीर की शक्ति बढ़ती है। अच्छी-अच्छी पुस्तकों के पढ़ने और विचार-मनन करने से मन की शक्ति बढ़ती है। ईश्वर का ध्यान करने और योग का अभ्यास करने से आत्मा की शक्ति बढ़ती है। श्री रामचन्द्र, श्री कृष्णचन्द्र, ऋषि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषों को हमें सम-विकास के लिए आदर्श रखना चाहिए।

प्रश्न-वैदिक धर्म की पांचवी शिक्षा क्या है ?

उत्तर-वैदिक धर्म की पांचवी शिक्षा है-यज्ञ की भावना को पैदा करना और बढ़ाना। ''यज्ञ'' का अर्थ सेवा और स्वार्थ-त्याग के भाव को धारण करना है। वेदों में ''यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म'' कहकर यज्ञ को सबसे अधिक श्रेष्ठ बताया गया है। इसलिए नित्य यज्ञ करना प्रत्येक मानव का पुनीत कर्त्तव्य है।

यहाँ यह बात समझने की है कि प्रत्येक मनुष्य अपने मल-मूत्र, पसीना, थूक आदि से कुछ वातावारण को नित्य गन्दा करता है। इसलिए नित्य यज्ञ करने से उतना वातावरण जो गन्दा हुआ था वह साफ व पवित्र हो जाता है, इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अपने

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज के उद्देश्य एवं मन्तव्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा लुधियाना में किए जा रहे भव्य आर्य महासम्मेलन के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के बारे में जानने योग्य आवश्यक बातें, जिन्हें क्रमशः नीचे दिया गया है। हम सभी आर्यजन चिन्तन एवं विचार करें कि वास्तव में आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य क्या है? 1. महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और अज्ञान से मुक्त करके सत्य और पवित्रता की स्थापना की। पराधीन भारत की सुप्त आत्मा को स्वराज्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नावस्था में लाने का सराहनीय कार्य किया। स्वराज्य शब्द की सर्वप्रथम उद्घोषणा करने वाले स्वामी दयानन्द ने कहा था कि कोई कितना भी करे जो स्वदेशी राज्य होता है, वही सर्वोपरि होता है। आर्य समाज श्रेष्ठ लोगों का संगठन है और श्रेष्ठ वे होते हैं जो विश्व को, मानवता को और मानव मूल्यों को समर्पित होते हैं।

2. आर्य समाज सब मनुष्यों एवं सब देशों के प्रति न्याय और स्त्री पुरूषों की समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करता है। यह जन्मना जात-पात का खण्ड़न करता है और गुण, कर्म व योग्यता के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानता है। इस विभाजन से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं होता। आर्य कोई जाति नहीं है। आर्य श्रेष्ठ विचारों वाले व्यक्ति को कहते हैं। आज भी अगर वही वर्ण व्यवस्था लागू हो जाए तो राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

3. स्वामी दयानन्द भारत को राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से एकसूत्र में बांधना चाहते थे। एक राष्ट्र का रूप देने के लिए उन्होंने भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराना चाहा। सामाजिक दृष्टि से देशवासियों को एक करने के लिए उन्होंने प्रचलित मतों के स्थान में वेद द्वारा प्रतिपादित धर्म को स्थान देने की कामना की थी। स्वामी दयानन्द को इन दोनों उद्देश्यों में सफलता मिली। समाज सुधार के क्षेत्र में आर्य समाज ने अद्भुत सेवा की। स्त्रियों की दुर्दशा के निवारण के लिए महर्षि दयानन्द ने बड़ी उदारता और वीरता के साथ कार्य किया।

4. आर्य समाज ने अपने स्थापना काल से ही सबसे अधिक कार्य शिक्षा के क्षेत्र में किया है। इस समय भारत में सरकार के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में दूसरा स्थान आर्य समाज एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का है। आर्य समाज ने न केवल स्कूल, कॉलेज की खोले, अपितु गुरूकुलों की स्थापना कर प्राचीन शिक्षा पद्धति को भी नवजीवन प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने एकांगी कार्य नहीं किया। आर्य समाज ने नारी शिक्षा की ओर भी न केवल ध्यान ही दिया अपितु उसे प्राथमिकता प्रदान की। इसी के परिणामस्वरूप आज शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की अग्रणी भूमिका है।

5. आर्य समाज की स्थापना करने के पश्चात महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के जो दस नियम बनाए, उनमें उन्होंने अपना लक्ष्य निर्धारित करते हुए छठे नियम में लिखा कि- संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। वेद में कहा गया है कि संसार को उन्नत करो। यह नियम ऐसा अद्भुत और अनोखा है जो संसार के किसी संगठन में नहीं पाया जाता। प्रत्येक समाज अपने समान विचार वाले लोगों को प्रमुखता प्रदान करता है। जैसे मुसलमान और ईसाई अपने-अपने सम्प्रदाय की स्थापना करके उसका विस्तार करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इसके विपरीत वैदिक धर्म संसार के लिए है। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज किसी एक देश या जाति विशेष से सम्बन्धित नहीं हैं । एक आर्य के लिए आर्य समाज के सदस्य ही नहीं अपितु संसार के दूसरे व्यक्ति, व्यक्ति ही नहीं सम्पूर्ण प्राणीमात्र सहानुभूति, दया और प्रेम के पात्र हैं।

6. आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जहां पर किसी के साथ कोई भेदभाव न हो। जाति, मत, पन्थ और सम्प्रदाय की तरह कोई व्यवहार न करे। सभी समान विचार वाले होकर सबके कल्याण के लिए मिलकर कार्य करें। समान विचार वाले होकर राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करें। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने द्वारा स्थापित समाज को आर्य समाज का नाम दिया। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ होता है अर्थात् जिनके विचार शुद्ध, आचार शुद्ध, व्यवहार और खान-पान शुद्ध होता है वही व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है। आर्य समाज व्यक्तियों के उस समूह का नाम है जहां पर आपस में कोई क्लेश, लड़ाई, झगड़ा नहीं है। सबके विचारों को सम्मान दिया जाता है। सबकी बातों पर अम्ल किया जाता है।

7. आर्य समाज के सिद्धान्त और नियम सार्वभौम हैं। आर्य समाज के नियम वेदों पर आधारित हैं। इन नियमों में किसी एक की उन्नति नहीं परन्तु सबकी उन्नति की कामना की जाती है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के नौवें नियम में लिखा कि-प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का उद्देश्य सारे संसार का कल्याण करना था । वे किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं अपितु सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को लेकर कार्य करते थे। यही कारण है कि आर्य समाज ने सभी क्षेत्रों में कार्य किया। आर्य समाज किसी के दबाव में नहीं आया और गलत का खुलकर विरोध किया। इसी कारण से आर्य समाज एक समाज सुधारक के रूप में सामने आया।

8. आर्य समाज श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज है। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ, धर्मपरायण, सदाचारी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ। आर्य शब्द किसी नस्ल या जाति का बोधक नहीं है और न ही किसी देश विशेष के व्यक्तियों के लिए ही इसका प्रयोग होता है। जिस व्यक्ति के अन्दर अच्छे गुण हैं, अच्छे संस्कार हैं, अच्छे विचार है वही मनुष्य आर्य कहलाने का अधिकारी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज नामक संस्था किसी मत-पन्थ और सम्प्रदाय पर आधारित नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर इस समाज की स्थापना नहीं की थी। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य विश्व भर को आर्य बनाना, सम्पूर्ण मानव जाति का उपकार करना अर्थात् लोगों की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। आर्य समाज की स्थापना के पीछे उनका लक्ष्य समाज में फैली बुराईयों और कुरीतियों को दूर करना था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जब अपने गुरू स्वामी विरजानन्द जी से शिक्षा ग्रहण करने के बाद कार्यक्षेत्र में उतरे तो समाज में अनेक प्रकार के पाखण्ड़ और अन्धविश्वास फैले हुए थे। स्त्री जाति की स्थिति दयनीय थी। नारियों को पैर की जुती समझकर चारदीवारी में कैद करके रखा जाता था। बाल विवाह की प्रथा होने के कारण दूध पीते बच्चों का विवाह करवा दिया जाता था। मूर्ति पूजा के कारण हमारे देश में अनेक प्रकार के पाखण्ड़ और अन्धविश्वास फैले हुए थे।

9. - महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि संसार भर में वैदिक धर्म का प्रचार करके मनुष्य मात्र को आर्य बनाया जाय। उद्देश्य जितना महान है उतना ही विशाल भी है और उसकी पूर्ति उससे भी कठिन प्रतीत होती है। कठिनाई के अनेक कारण हैं। उनमें सबसे बड़ा यह है कि आर्यत्व स्वयं एक कठिन वस्तु है, ईसाई उसे कहते हैं जो ईसाई पादरियों द्वारा बतलाए गए सिद्धान्तों को स्वीकार करता हो। मुसलमान उसे समझा जाता है जो हजरत मुहम्मद और कुरान पर ईमान

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बलमसि बलम् मयि धेहि (यजु० 19/9)

-ले० अविनाश चन्द्र #122, सैक्टर 12ए, पंचकूला

परमपिता परमात्मा सभी प्रकार के बल का स्रोत है इसीलिए उससे 'मुझे बल प्रदान कीजिए' ऐसी प्रार्थना की जाती है। बल का तात्पर्य शक्ति, ऊर्जा, क्षमता और सामर्थ्य है। बल या शक्ति संसार की सभी पदार्थों जड़, चेतन में निहित है। जड़ पदार्थों वायु, जल, विद्युत, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, पृथिवी, अणु, परमाणु सभी में शक्ति होती है। यही उस पदार्थ का गुण या धर्म कहलाता है। यह शक्ति ईश्वर प्रदत्त है या उन पदार्थों में ईश्वर की शक्ति है। केनोपनिषद में कथा आती है कि जड़ देवताओं तथा वायु, अग्नि में भी अभिमान आ गया तो ईश्वर यक्ष के रूप में प्रकट हुआ। देवता यक्ष के पास बारी-बारी से गये और अभिमान-पूर्वक अग्नि ने अपनी दग्धशीलता, वायु ने अपनी वेग शक्ति का वर्णन किया। यक्ष ने बारी-बारी से उसे जलाने, वायु से उसे उड़ाने को कहा परन्तु अग्नि उस तिनके को जला न सकी और वायु उसे उड़ा ना सकी। तब ब्रह्म विद्या ने उन्हें यह ज्ञान कराया कि यह ब्रह्म ही है जिसकी सत्ता से सकल संसार का संचालन हो रहा है। उसी की शक्ति से ही जड़ पदार्थों में शक्ति है।

जड़ पदार्थों में जो शक्ति ईश्वर ने नियत की है वे उस शक्ति का प्रयोग करने के लिए बाध्य हैं। सूर्य, पृथिवी, चंद्रमा को यह स्वतंत्रता नहीं कि वे अपने नियत अक्ष के अतिरिक्त कोई गति करें, सूर्य उष्णता या प्रकाश न दे, चंद्रमा शीतलता छोड़ दे, वायु प्रवाहित न हो, अग्नि ज्वलनशील न रहे आदि। इसके अतिरिक्त यह अपनी शक्तियों का विकास या संवर्धन नहीं कर सकते। ईश्वर ने जड़ पदार्थों की रचना जिस उद्देश्य के लिए की है, उन्हें उसके अनुसार ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना है। इसी शक्ति के कारण ही यह पदार्थ सभी जीवधारियों के लिए कल्याणकारी है। इनकी शक्ति का दोहन मनुष्य अपने प्रयोग के लिए करता रहता है।

चेतन सृष्टि में मनुष्य और इतर प्राणी जीवधारी पशु, पक्षी, कीट, पतंग, वनस्पति जगत में शारीरिक बल के साथ-साथ स्वाभाविक प्रवृत्तियां (आहारनिद्रा, सन्तानोत्पत्ति) ईश्वर द्वारा नियत है जिनके अनुसार वे अपना जीवन यापन करते हैं। वनस्पतियों में यह शक्ति है कि पृथ्वी से अपनी आवश्यकतानुसार तत्व ग्रहण करें तथा ऋतु के अनुसार पुष्प तथा फलवती हों। मनुष्य में ईश्वर ने शारीरिक बल एवं स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अतिरिक्त आत्मिक बल, बौद्धिक बल, मानसिक बल एवं आध्यात्मिक बल सभी में कर्मफल व्यवस्था के अनुसार नियत किया है। इन सभी बलों के विकास, संवर्धन और प्रयोग के लिए मनुष्य स्वतंत्र है। उचित खानपान, संयम, व्यायाम, आसन प्राणायाम से शारीरिक बल की वृद्धि होती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सत्संग, ईश्वर भक्ति और उचित व्यवहार से मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक बल की वृद्धि होती है।

मनुष्य में बल ज्ञानेन्द्रियों (आंख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा) तथा कर्मेन्द्रियों (हाथ, पैर, वाणी, श्वास प्रश्वास ज्ञानेन्द्रियों) के अतिरिक्त मन और बुद्धि में दिया है। परन्तु इन्द्रियां तो जड़ हैं उनमें अपनी शक्ति स्वयं नहीं होती। वह शक्ति तो ईश्वर ने आत्मा के द्वारा इन्द्रियों में दी हैं। आत्मा के बिना कोई इन्द्रिय कार्य करने में सक्षम नहीं है। उपनिषद् में कहा गया है कि कान नहीं सुनता कान शक्ति जिससे प्राप्त करता है, आंख नहीं देखती आंख देखने की शक्ति जिससे प्राप्त करती है, नाक सूंघने व श्वास प्रश्वास की शक्ति जिससे प्राप्त करता है, त्वचा जिससे स्पर्श की शक्ति प्राप्त करती है वह आत्मा तत्व हैं इसीलिए यजु. 25/13 में उस ईश्वर को 'आत्मदा बलदा' कह कर स्तुति की गई है।

मनुष्य की इन्द्रियां जड़ हैं परन्तु ईश्वर द्वारा नियत आत्मा से शक्ति प्राप्त करती है। इन्हीं इन्द्रियों की शक्ति के लिए ईश्वर से सदा प्रार्थना की जाती है। सब को धारण करने वाला सर्वव्यापक प्रजापति परमेश्वर संपूर्ण सृष्टि के इक्कीस तत्वों का बल मेरे शरीर व वाणी में धारण कराने (वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे। अथर्व. 1.1.1) शरीर के प्रत्येक अंग में बल की प्रार्थना ब्रह्मयज्ञ (संध्या) में की जाती है (ओं वाक् वाक्..... ओं करतल कर पृष्ठे) तथा देवयज्ञ (अग्निहोत्र) के प्रारम्भ में की जाती है (ओं वाङ्म आस्येऽस्तु, ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु, ओं वाह्वोर्मे बलमस्तु, ओं ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु, ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वा में सह सन्तु)। मनुष्य में शक्ति इन्द्रियों, विषयों, मन, बुद्धि और आत्मा में नियत रहती है। कठोपनिषद् अध्याय एक श्लोक 10 में कहा गया है-

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।

मनसस्तु परा बुद्धिः बुद्धेरात्म महान परः।।

अर्थात् इन्द्रियों से उनके विषय (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द) अधिक बलवान हैं, विषयों से बलवान मन, मन से बलवान बुद्धि और बुद्धि से बलवान और श्रेष्ठ आत्मा है। साधारण मनुष्य की इन्द्रियां आसानी से विषयों के वश में आ जाती हैं। परन्तु यदि मन बलवान हो तो विषय इन्द्रियों को आकर्षित नहीं करते। परन्तु इसके लिए बलवान विवेकात्मिका बुद्धि का नियंत्रण आवश्यक है। बुद्धि से अधिक बलवान आत्मा है जिसके अधीन मन और इन्द्रियां हैं। आत्मा के दृढ़ संकल्प में बड़ी शक्ति है। 'अहं वृक्षस्य रेरिवा। कीर्तिः पृष्ठगिरेरिव-तेत्तिरीय उप-निषद् बल्ली 1.10 अर्थात् मैं संसार रूपी वृक्ष का कंपाने वाला हूं, मेरी कीर्ति पर्वत पृष्ठ की भांति अचल है, ऐसा आत्मा शक्ति का वर्णन है।'

प्रश्न यह उठता है कि क्या शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा का बल प्राप्त कर लेना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। बल अपने में ही उद्देश्य नहीं है। बल के साथ जब तक ज्ञान, संकल्प और कर्म की त्रिशक्ति का समावेश न हो तो बल व्यर्थ है। बल होगा तो उसका प्रयोग तो होगा ही। बल का प्रयोग बिना ज्ञान के किया जाए तो कर्म विषयों और इन्द्रियों के अनुसार होने लगेंगे। यह कर्म लोभ, ईर्ष्या, द्वेष के वशीभूत होंगे तथा नैतिकता के विरुद्ध और सामाजिक नियमों के उल्लंघन होंगे। चोरी, डकैती, लूटमार, बलात्कार, दूसरे के अधिकारों पर अतिक्रमण, बिना ज्ञान के बल प्रयोग के परिणाम हैं। ऐसा बल प्रयोग न तो व्यक्ति के लिए और न ही समाज के लिए कल्याणकारी हो सकता है। ऐसा बल प्रयोग तो चरित्र पतन, अनुशासनहीनता और अराजकता का ही पोषक होगा।

ज्ञान, संकल्प और कर्म के लिए बल के साथ पवित्रता का होना आवश्यक है। इसलिए ब्रह्मयज्ञ (संध्या) के प्रारम्भ में ही प्रार्थना की जाती है कि-

ओं भूः पुनातु शिरसि-हे ईश्वर मेरे सिर को पवित्र करें।

ओं भुवः पुनातु नेत्रयो-हे दुःख विनाशक प्रभो ! मेरे नेत्रों को पवित्र करें।

ओं स्वः पुनातु कण्ठे-हे आनंदमय आनंददाता प्रभो ! मेरे कंठ को पवित्र करें।

ओं महः पुनातु हृदये-हे सर्व पूज्य प्रभो ! मेरा हृदय पवित्र करें।

ओं जनः पुनातु नाभ्याम्-हे सर्व उत्पत्तिकर्ता प्रभु ! मेरी नाभि को पवित्र करें।

ओं तपः पुनातु पादयो-हे दुष्टों के सन्तापकारक सत्य ज्ञान स्वरूप परमेश्वर मेरे पैरों को पवित्र करें।

ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि-हे सत्य स्वरूप अविनाशी भगवान् मेरे सिर को पुनः पुनः पवित्र करें।

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र-हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप मेरी सभी इन्द्रियों को पवित्र करने की कृपा करें।

यदि इंद्रियां पवित्र हों और मन शिव संकल्प वाला हो तथा बुद्धि श्रेष्ठ मार्ग की अनुयायी हो तो विषय वासना मनुष्य में कलुषित वृत्तियां जागृत नहीं होने देंगी और बल का सदुपयोग होगा, संकल्प

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गायत्री मन्त्र

-ले० मृदुला अग्रवाल १६, सी सरत बोस रोड कोलकाता-६७०००२०

''ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।''

''गायत्री-मन्त्र'' चारों वेदों की आत्मा है। वेदों में इसे ''वेदमाता'' भी कहा गया है। चारों वेदों के हजारों मन्त्रों में ''गायत्री-मन्त्र'' सर्वश्रेष्ठ है। यह परमात्मा का गुणगान कर उनकी प्रशंसा करता है। इसे ''सावित्री-मन्त्र'' भी कहा जाता है। उपनयन के समय ब्रह्मचारी को आचार्य इसी सावित्री-मन्त्र से उपदेश करते हैं। यह मन्त्र उनके शिष्यों के प्राणों की रक्षा करता है। ''गायत्री-मन्त्र'' में २४ अक्षर हैं। आठ-आठ अक्षरों के तीन पद हैं। इनका वर्णन बृहदा-रण्यक उपनिषद में विस्तृत रूप से किया गया है। ''गायत्री-मन्त्र'' का ध्यान एवं उच्चारण करने से हम सब बुराईयों से दूर हो जाते हैं। अगर हम ''गायत्री-मन्त्र'' को अपने मन में पूर्णरूप से आत्मसात कर लेवें तो प्रभु अपनी सर्वस्व चमकती हुई प्रभा से हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित अवश्य करते हैं।

''गायत्री-मन्त्र'' की शक्ति के सम्बन्ध में श्री ओमप्रकाश बजाज (मध्य-प्रदेश) ने ''वैदिक-संसार'' पत्रिका (जून २०१६) में लिखा है कि अमरीकी वैज्ञानिक डॉ. हावर्ड स्टीनजेरिल ने विश्वभर के सभी धर्मों के मन्त्र, भजन, प्रार्थना-सूत्रों का संकलन करके, उनका ''शरीर-विज्ञान प्रयोगशाला'' (Physology-Laboratory) में प्रभाव परीक्षण किया। वैज्ञानिक आधार पर हमारा ''गायत्री-मन्त्र'' सर्वाधिक प्रभाव-शाली एवं लाभप्रद सिद्ध हुआ।

''गायत्री-मन्त्र'' के प्रत्येक शब्दों की व्याख्या या अर्थ-''ओ३म्'' ''प्रणव'' = सर्वव्यापक Omni-present, सबका रक्षक all-pro-tecting ''ओ३म्'' ईश्वर का सर्वोत्तम नाम है। क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं-जैसे 'अकार' से विराट्, अग्नि और विश्वादि। 'उकार' से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। 'मकार' से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य-शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं।

-सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम समुल्लास।।

ओ३म् के अतिरिक्त बाकी जितने नाम हैं वे सब 'ओ३म्' के ही विशेषण हैं, जो उसके सद्गुणों का बखान करते रहते हैं, इसीलिये इसको सर्वगुणों का धाम भी कहते हैं। गीता, अध्याय-७, श्लोक-८ में श्रीकृष्ण ने कहा भी है, ''सर्ववेदेषु प्रणवः'' अर्थात् मैं सम्पूर्ण वेदों में ''ओंकार'' हूँ। 'ओंकार' नाम से परमात्मा का ग्रहण होता है।

''हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्या-पिहितं मुखम्।

योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसा-वहम्।। ओ३म् खं ब्रह्म।।''

-यजुर्वेद, अध्याय-४०, मन्त्र-१७।।

भावार्थ-''सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यों ! जो मैं यहाँ हूँ वही अन्यत्र सूर्यादि लोक में जो अन्यस्थान सूर्यादि लोक में हूँ वहीं यहाँ हूँ सर्वत्र परिपूर्ण आकाश के तुल्य व्यापक मुझसे भिन्न कोई बड़ा नहीं मैं ही सबसे बड़ा हूँ। मेरे सुलक्षणों से युक्त पुत्र के तुल्य प्राणों से प्यारा मेरा निज नाम ''ओ३म्'' यह है। जो मेरा प्रेम और सत्याचरण से शरण लेता है अन्तर्यामीरूप से मैं उसकी अविद्या का विनाश कर उसके आत्मा का प्रकाश करके शुभ गुण कर्म स्वभाव वाला कर सत्यस्वरूप का आवरण स्थिर कर योग से हुए विज्ञान को दे और सब दुःखों से अलग करके मोक्ष सुख को प्राप्त कराता हूँ।''

ईश्वर ही 'ओ३म्' है। 'ओ३म्' शब्द शब्द से आत्मा को सत्यबोध होता है। 'ओ३म्' अविनाशी है-कभी नष्ट नहीं होता। सारे वेद, धर्मानुष्ठान करने वाले तपस्वी, ब्रह्मचारी आदि जिसकी प्राप्ति की इच्छा करते हैं, उसका नाम 'ओ३म्' है। गीता, अध्याय-८, श्लोक-११ एवं १३ के अनुसार भी वेद के जानने वाले विद्वान् सच्चिदानन्दघन परमपद को 'ओंकार' नाम से कहते हैं। जो पुरुष ''ओ३म्'' ऐसे एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थ स्वरूप परमात्मा का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्यागता है वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।

''भूः''= प्राणदाता, Creater of human beings and other Be-ings. सब प्राणियों को जीवन प्रदान करने वाला, प्राणों का प्राण, प्राण-विधाता है। सबके प्राणों की रक्षा-हेतु अन्न एवं ओषधि आदि निर्मित करने वाला परमेश्वर ही होता है। यजुर्वेद, अध्याय-४०, मन्त्र १७ में जो सूर्य में भी व्यापक पुरुष अर्थात् परमात्मा का निज नाम 'ओ३म्' बताया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे गायत्री-मन्त्र का देवता सविता भी है एवं सविता का अर्थ सूर्य भी होता है और उसी सूर्य को परमात्मा ने ही निर्मित किया है, इसीलिये सूर्य की धूप का विधिवत् सेवन करने से दुर्गन्धादि जीवन दुष्ट जन्तु रोगकारकों के दोषों को भून डाला जाता है। सूर्य की धूप और प्रकाश से निद्रा, आलस्यादि तमोगुण के कार्यों का नाश भी होता है। सूर्य द्वारा वर्षा और यवगोधूमादि ओषधि और वह पिप्पलादि वनस्पति उगते हैं जिनसे अन्न होता है। अन्न हमारे प्राणों की रक्षा करने में कितना आवश्यक है यह हम सभी जानते हैं। यह सारा वृतान्त सामवेद, मन्त्र-१४६२ के अनुसार भी है।

परमात्मा का स्मरण रूपी पुष्प हमारे प्राणों को सुगन्धित करता है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे प्राणों को निज शरण में लीजिये।

''भूरिति वै प्राणः'' ''यः प्राणयति चराऽचरं जगत् स भूः स्व-यम्भूरीश्वरः'' अर्थात्, जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके ''भूः'' परमेश्वर का नाम है-

-सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-३।।

''भुवः''= दुखहर्त्ता, Destroyer of miseries, सब दुःखों एवं क्लेशों से हमें छुड़ाने वाला। हमारे पापों को हर लेने वाला। संसार में तीन प्रकार के दुःख है: (१) अध्यात्मिक = जो आत्मा एवं शरीर में अविद्या राग-द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ादि से होते हैं। (२) आधिभौतिक = जो शत्रु, व्याघ्र और सर्पादि से प्राप्त होता है। और (३) आधिदैविक = जो अतिवृष्टि, अतिशीत, अति उष्णता, मन और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है। ''भुवः'' इन तीनों प्रकार के क्लेशों और दुःखों को दूर करके हमें कल्याणकारक कर्मों में सदा प्रवृत्त करता है। पराधीनता से दुःखों की प्राप्ति होती है, इसलिये ''भुवः'' हमें स्वाधीनता प्रदान करता है, जिससे हमें सुख मिलता है। ऐहिक दुःखों में अविचलित रहना सिखाता है। ''भुवरित्यपानः'' ''यः सर्वं दुःखमपानयति सोऽ-पानः'' जो सब दुःखों से रहित, जिस के संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं इसलिये उस परमेश्वर का नाम ''भुवः'' है।

-सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३।।

''स्वः''=सुखकर्त्ता, स्वयं सुख-स्वरूप एवं सबको सुख देने वाला। Full of delight and gives delight to his evotees, giver of peace and bliss. अपने उपासकों को सुख प्रदान करता है। ''यो मोदयति स देवः'', जो स्वयं आनन्दस्वरूप है और दूसरों को आनन्द देता है। सबके मन को आन्तरिक शान्ति प्रदान करता है। शान्त मन ही अपेक्षाकृत तेजस्वी मेधा प्रदान करती है। किसी भी दुःख से विचलित नहीं होता एवं मनुष्य का आध्यात्मिक विकास करता है। मनुष्य दिव्यगुणों की प्राप्ति के लिये ज्ञानस्वरूप परमेश्वर का ध्यान करता है। सर्वोपरि विराजमान, मनन योग्य वह परमेश्वर सर्वव्यापक होकर स्थित है। उस प्रकाशस्वरूप का बल सर्वत्र प्रकाशमान है। वह ही महान् देव अज्ञान अन्धकार से हमें बचाता है। ''स्वरिति व्यानः'' ''यो विविध जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः'' जो नानाविध जगत् में व्यापक होकर, सबको धारण करता है इसलिये उस परमेश्वर का नाम ''स्वः'' है।

-सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३।।

छान्दोग्योपनिषद में इन तीनों 'भूः', 'भुवः', 'स्वः' का अर्थ

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सद्चिन्तन

-कृष्णा खोसला 1481/21, पंचकूला

सद्चिन्तन सद्मार्ग पर लाने का साधन है
कर्त्तव्य पालन हेतू कंटकाकीर्ण पथ आगे बढ़ने का मूल मंत्र है।

सद्चिन्तन व सद्विचारों से मन होता है निर्मल
इससे ही सुन्दर कल्पना रूपी पौधा है पुष्पित और पल्लवित।

सद्चिन्तन सकारात्मक संघर्षों से जूझने की देता है शक्ति
लक्ष्य को पाने का रास्ता है पथ प्रशस्त।

सकारात्मक सोच ऊन्नति के मार्ग के अवरोधक हटाती है
साहस, इच्छा, शक्ति व दृढ़ विश्वास के सृजन में सहायक होती है।

व्यापक चिन्ता का महारोग लकड़ी को लगे दीमक समान है
यह धीमी गति से मनुष्य को खोखला करता रहता है।

शारीरिक व मानसिक तनावों से संतप्त व्यक्ति
अनावश्यक चिन्ताओं के बोझ से भंवर में फंसता जाता है।

चिन्ता की चिन्गारी से बचने का साधन सद्चिन्तन है
ईश्वर पर अटल विश्वास रखना मन का मन्थन है।

हीन भावनाएं नकारात्मक सोच ऊन्नति के अवरोधक हैं
यह मनुष्य को आत्मविश्वास रहित बना, निराशा के गर्त में धकेलती है।

सपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए संजोए जाते हैं
सपने सद्चिन्तन शुद्ध विचारों और पुरुषार्थ से मंजिल तक लाते हैं।

सद्चिन्तन सफलता की सीढ़ी है सच्चरित्रता का स्त्रोत है,
सद्चिन्तन सद्व्यवहार सामाजिकता का आधार है।

आर्य समाज जीरा का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जीरा का वर्ष 2017 का वार्षिक चुनाव आर्य समाज के प्रधान श्री सुभाश चन्द्र आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सुभाष चन्द्र आर्य को पुनः प्रधान एवं कोषाध्यक्ष पद के लिए चुना गया। श्री सुनील आर्य को मन्त्री पद के लिए चुना गया। चुनाव के बाद सभी सदस्यों ने ईमानदार व कर्मठ अधिकारियों को पुष्पमालाएं पहनाकर सम्मानित किया और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सुनील कुमार आर्य मन्त्री आर्य समाज

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा। **-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा**

पृष्ठ 5 का शेष-गायत्री मन्त्र

अस्ति, भाति, और प्रीति है अर्थात् Being, Becoming, Bliss. ये तीन 'महाव्याहृति' कहलाती है। सब वेदों में 'गायत्री-मन्त्र' व्याहृति समेत नहीं है, सिर्फ यजुर्वेद, अध्याय३६, मन्त्र-३ में यह तीनों व्याहृतियों के साथ है, यजुर्वेद के इस मन्त्र का भावार्थ-

''जो मनुष्य कर्म, उपासना और ज्ञान सम्बन्धिनी विद्याओं का सम्यक् ग्रहण कर आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म, अनैश्वर्य और दु:खरूप मलों को छुड़ाकर धर्म, ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते हैं, उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता है।

''तत्''=वह, आप, उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग

''सवितु:''=सब जगत् का उत्पादक (उत्पन्नकर्त्ता) है। Eveator of the world. गीता, अध्याय-१०, श्लोक-८ में श्रीकृष्ण कहते हैं कि ''मैं सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हूँ।'' सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, The illuminator of all the luminous bodies like the sun. ''य: सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य'' सकल ऐश्वर्ययुक्त जगत् का उत्पादक एवं निर्माता।

-सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३।।

''वरेण्यम्''=ग्रहण और ध्यान करने योग्य, अतिश्रेष्ठ, वरण करने योग्य, प्राप्त होने योग्य, The lest to become one with him 'वर्तुमर्हम्' उस परमात्मा का जो स्वीकार करने योग्य हो, अतिश्रेष्ठ हो।

''भर्ग:''= तेजस्वरूप, परमात्मा का शुद्ध, पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप, The pure and most redominating power of god, जिस पूर्ण शुद्ध स्वरूप का भक्त लोग ध्यान करते हैं। विकारों (षट्-विकार) को भस्म करने वाला, अविद्यादि दु:खदायक विघ्नों एवं पापरूपी दु:खों के मूल को नष्ट करने वाला। Burner of the sinful activities of human beings.

पंडित तुलसीराम स्वामी कृत सामवेद, मन्त्र-१४६२ (गायत्री-मन्त्र) के अनुसार 'भर्ग:' शब्द से अन्न का ग्रहण जानिये। सूर्य द्वारा वर्षा, ओषधि एवं वनस्पति उगते हैं जिनसे अन्न होता है। इसलिये भी सूर्यजनित अन्न का विधिपूर्वक धारण, सेवन करना इस मन्त्र का उपदेश है।

''देवस्य''=देवों के देव Supreme god, आत्माओं के प्रकाशक, सामग्र ऐश्वर्य के दाता, The greatest bestower of splendid wealth (both material and spiritual) in the form of wishdom (ज्ञान), Peace (शान्ति), and faith (विश्वास)। ''यो दीव्यति दीव्यते वा स देव:'' जो सर्व सुखों का देने हारा, सर्वत्र विजय कराने हारा, जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं।

''धीमहि''= धारण करें, परमात्मा का हम ध्यान करें। Meditate upon Him. आपकी कृपा से निरन्तर स्वयं के हृदय में आपका ही ध्यान करें, आपको ही धारण करें, जिससे हमारी बुद्धि को आत्मिक ज्ञान प्राप्त हो।

''य:''= आप, 'जगदीश्वर' जो सविता देव परमात्मा

''न:''='अस्माकम्' हमारी

''धिय:''= बुद्धियों को सत्य वैदिक ज्ञान की प्रेरणा दें। 'बुद्धि' Right intellect.

''प्रचोदयात्''= 'प्रेरयेत' प्रेरणा करें अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव में प्रवृत्त करें।

ऋग्वेद, काण्ड-३, सूक्त-६२, मन्त्र-१० (गायत्री-मन्त्र):

भावार्थ-जो मनुष्य सबके साक्षी पिता के सदृश वर्त्तमान न्यायाधीश दयालु शुद्ध सनातन सबके आत्माओं का साक्षी परमात्मा की ही स्तुति और प्रार्थना करके उपासना करते हैं उनको कृपा का समुद्र सबके श्रेष्ठ परमेश्वर, दुष्ट आचरण से पृथक् करके श्रेष्ठ आचरण में प्रवृत्त करा और पवित्र तथा पुरुषार्थयुक्त करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कराता है।

कई तथाकथित पंडितजन-विद्वान् इत्यादि लोगों ने यह अफवाह फैला रखी है कि ''गायत्री-मन्त्र'' का उच्चारण करने का अधिकार सिर्फ साफ-सुथरे- स्वच्छ पुरुष वर्ग का ही है, स्त्रियों व कन्याओं का नहीं। परन्तु यह सरासर मिथ्या वक्तव्य है, क्योंकि ''गायत्री-मन्त्र'' वेदों का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है एवं वेदों में कहीं नहीं लिखा है कि वेद-मन्त्रों को सिर्फ पुरुष-वर्ग ही उच्चरित कर सकता है।

आर्य समाज जालन्धर छावनी का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 29-1-2017 को आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव श्री गणपत राय की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से श्री चन्द्र गुप्ता जी को प्रधान चुन लिया गया और उन्हें अन्य अधिकारी एवं अन्तरंग सभा बनाने का सर्वसम्मति की अधिकार दिया गया और उन्होंने उसी समय दिए गए अधिकारों से निम्नलिखित अपनी कार्य-करिणी सभा तथा अतरंग सभा बनाई। प्रधान श्री चन्द्र गुप्ता जी वरिष्ठ उपप्रधान जी गणपतराय सोनी जी, उपप्रधान श्री राकेश आर्य जी उपप्रधान श्री अशोक जावेय जी। मन्त्री : श्री जवाहर लाल महाजन जी। उपमन्त्री : श्री अयोध्या प्रसाद अग्रवाह जी उपमन्त्री : श्री चन्द्र शेखर अग्रवाह जी को कोषाध्यक्ष श्री रघुवीर सिंह जादौन जी पुस्तकाध्यक्ष: श्री रघुनाथ ठाकुर जी अधिष्णता: आर्यवीर दल सुरेन्द्र मोहन लाला जी आर्य युवा शक्ति प्रमुख: श्री अशोक शर्मा लेखा निरीक्षक डाक्टर अशोक वर्मा कानूनी सलाहकार श्री संजीव गुप्ता Advocate लोक सम्पर्क विभाग श्री जतेन्द्र सेठ। अन्तरंग सभा श्री कृष्ण लाल गुप्ता Advocate, श्री संदीप सेठी, श्री मुनीष महाजन, श्री धर्मेन्द्र अग्रवाल, श्री सूरज अग्रवाल।

-मन्त्री जवाहर लाल महाजन

पृष्ठ 2 का शेष-''वैदिक धर्म की मुख्य शिक्षाएँ''

कर्त्तव्य भाव से नित्य यज्ञ करना चाहिए ताकि वातावरण शुद्ध बना रहे। इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों में पाँच महायज्ञों में यज्ञ करना भी एक महायज्ञ बताया है।

यह लेख मैने अति उपयोगी व लाभदायक समझकर वैदिक धर्म, आर्य समाज प्रश्नोत्तरी लघु पुस्तिका के सहयोग से लिका है। कृपया पाठकगण इसका भरपूर लाभ उठावें। जिससे मेरी इच्छा पूर्ण हो।

पृष्ठ 4 का शेष-बलमसि बलम् मयि धेहि (यजु० 19/9)

पवित्र और कर्म कल्याणकारी होंगे। इसलिए ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि हे ईश्वर आप की कृपा से हम कानों से सदा भद्र कल्याण को ही सुनें, आंखों से सदा शुभ देखें, हमारे अंग और प्रत्यंग सदा दृढ़ और स्थिर बने रहें। **(भद्रं कर्णेभि श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।** स्थिरैरन्गै स्तुष्टुवाम्.... यजु. 25/21)। हे ईश्वर! मेरा मन आपकी कृपा से अपने तथा दूसरे प्राणियों के लिए कल्याणकारी संकल्प वाला हो **(तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु**-यजु. 34/1-6) **धियो यो नः प्रचोदयात्**-यजु. 36/3-हे ईश्वर! हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

बल का सदुपयोग अपने तथा समाज के कल्याण के लिए होना आवश्यक है। इसके लिए उचित ज्ञान, शिक्षा और संस्कारों के साथ-साथ तप, सतत अभ्यास भी आवश्यक है। शारीरिक बल हो या मानसिक बल अथवा बौद्धिक बल हो उसके प्रयोग में संयम, अनुशासन, नैतिकता, परोपकार की भावना हो तभी उसका सदुपयोग कहलायेगा और तभी व्यक्तिगत व सामाजिक उन्नति संभव होगी। यजु. 19/8 में यह निर्दिष्ट है कि जो मनुष्य सूर्य, चंद्रमा के समान तेजस्वी, विद्या पराक्रम वाले, बिजली के तुल्य अति बलवान हो के आप आनन्दित हो और अन्य सबको आनन्दित किया करते हैं वे यहां परमानंद को भोगते हैं। वास्तव में सभी प्रकार के बल (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भौतिक सम्पन्नता) का होना, उसमें पवित्रता का होना और उसका अपने व समाज के लिए सदुपयोग होना ही कल्याणकारी है, उन्नति का मार्ग है और इसकी अभिव्यक्ति कवि के शब्दों में इस प्रकार है-

सब वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें,
बल पाय चढ़ें सब ऊपर को।
अविरुद्ध रहें ऋजु पंथ गहें,
परिवार कहें वसुधाभर को।।
ध्रव धर्म धरे पर दुख हरें,
तन त्याग तरें भव सागर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें भूमण्डल को।।

अस्तु ! बल को पराक्रम पुरुषार्थ चतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की ओर लगाएं तभी बल प्राप्ति की, जीवन की साथर्कता है।

मृतक देह संभाल फ्रीजर बनवाया गया

पंजाब की प्राचीन आर्य समाजों में आर्य समाज मोगा को विशेष स्थान एवं मान उपलब्ध है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दिशा-निर्देश एवं प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व एवं प्रेरणा से 112 वर्ष हो चुके आर्य समाज मोगा क्रमिक विकास करते हुए आज एक भव्य समाज के रूप में परिगणित है। यहाँ दैनिक एवं साप्ताहिक यज्ञ विशेष रूप से बच्चों, गणमान्यों एवं पारिवारिक जनों की उपस्थिति में सम्पन्न होता है। पाठ्पुस्तक कोष के माध्यम से निर्धन बच्चों को यहां से पुस्तकें, कॉपी इत्यादि नि:शुल्क दिए जाते हैं। युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द के आर्य समाज के छठें नियम अनुसार संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, इस नियम को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज मोगा द्वारा समाज सेवार्थ एक मृतक देह संभाल फ्रीजर बनवाया गया है, जिससे अपने परिजनों के आने की प्रतीक्षा में देर समय तक देह संभाल कर रखने के लिए इस देह संभाल बॉक्स का निर्माण किया गया है। जिसे सामाजिक सेवा के लिए समर्पित किया गया है। हम सभी मिलकर ऋषि के नियमों को ध्यान में रखते हुए समाज सेवा के कार्यों को अपनाएं।

-नरेन्द्र सूद प्रधान आर्य समाज मोगा

पृष्ठ 3 का शेष-महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं ...

रखे। इस दृष्टि से ईसाई अथवा मुसलमान को पहचानना बहुत आसान है परन्तु आर्य शब्द की व्याख्या इतनी सरल नहीं है। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। जिसके कर्म और विचार दोनों श्रेष्ठ हो वह आर्य कहलाता है। महर्षि दयानन्द ने अपने स्थापित किए हुए समाज का नामकरण न तो अपने नाम से किया और न ही किसी अन्य के नाम से । उन्होंने समाज का नाम आर्य समाज के नाम से रखा। इसकी यही सुन्दरता है कि महर्षि ने नामकरण द्वारा ही अपने अभिप्राय को सर्वथा स्पष्ट कर दिया। वह आर्य समाज को अन्य मत मतान्तरों की तरह कोई पन्थ नहीं बनाना चाहते थे और न ही ये चाहते थे कि केवल किन्हीं मन्तव्यों को मान कर कोई व्यक्ति धार्मिक समझा जा सके। वह धार्मिक तभी समझा जा सके जब उसके कर्म भी आर्यत्व लिए हो। आर्य किसे कहते हैं? इस प्रश्न का सरलतम उत्तर यह है कि जिसके विचार शुद्ध और विशाल हो और जीवन धर्मानुकूल हो वह आर्य है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 19 फरवरी 2017 को आर्य कॉलेज महिला विभाग सिविल लाईन्ज लुधियाना में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर हमारा मुख्य उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार एवं आर्य समाज की उन्नति होनी चाहिए। इसलिए सभी आर्य समाजें पूरे उत्साह एवं श्रद्धा के साथ इस सम्मेलन में भाग लेकर आर्य समाज के उद्देश्यों एवं मन्तव्य को जानें और एकजुट होकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें।

प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.)

स्वामी दयानन्द सरस्वती

के तत्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर लुधियाना में आर्य महासम्मेलन का आयोजन रविवार 19 फरवरी 2017

कार्यक्रम

शनिवार 18 फरवरी 2017

विशाल शोभायात्रा प्रातः 10:30 बजे

आर्य कॉलेज महिला विभाग समीप पुराना दयानन्द हस्पताल लुधियाना से आरम्भ होकर कैलाश सिनेमा चौक, उपकार नगर दशहरा ग्रांऊड से शिव मन्दिर होते हुए, वृन्दावन रोड़ से सत्संग रोड़ से होकर आर्य कॉलेज महिला विभाग में सम्पन्न होगी।

रविवार 19 फरवरी 2017

आर्य महासम्मेलन

स्थान: आर्य कॉलेज महिला विभाग, लुधियाना
गायत्री महायज्ञ:- प्रात: 9:00 बजे से 10:15 बजे तक
ज्योति प्रज्वलन:- प्रात: 10:15 बजे
श्रीमती शालू एवं श्री मनीष मदान
बी. के. स्टीलस, लुधियाना

ध्वजारोहण:- प्रात: 10:20 बजे

श्री सुदर्शन शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

योग प्रदर्शन:- प्रात: 10:30 बजे
भजन एवं प्रवचन:- प्रात: 11:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक
प्रवचन:- स्वामी सम्पूर्णानन्द जी एवं
आचार्य विश्वामित्र जी

धन्यवाद एवं शान्तिपाठ

ऋषि लंगर:- दोपहर बाद 1:15 बजे

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।